⇒ राजनैतिक विकेन्द्रीकरण;

औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य विघटन की प्रक्रिया से गुजर रहा था। भारत में क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हो रहा था।

न सिर्फ ये क्षेत्रीय शक्तियाँ आपस में संघर्षरत थीं बल्कि यह दौर 'कल्चरल कारुसेस' (सांस्कृतिक संक्रमण) का था

⇒ आर्थिक रूप से भारत विपन्नता के दौर से गुजर रहा था, जबतक मुगल प्रणाली ठीक से काम कर रहा था तबतक आर्थिक सम्पन्नता (कृषि व शिल्प में) थी, अब जड़ता आ गई थी।

⇒ एथनिक समस्या (नृजातिय समस्याएँ)

भारत के विभिन्न नृजातिय संघटक यथा सीख, सतनामी, जाट, मराठा इत्यादि

संबंधित थे।

उपरोक्त चारो प्रवृतियाँ 1707-1757 के बीच लगातार मजबूत होती दिखती हैं। जो अंग्रेजो के शासन से छूटती हैं। कहने का प्रयास हुआ कि प्लासी / बक्सर की लड़ाई एक क्रांति को जन्म देती है। इसके बाद भारत में आधुनिकता की शुरूआत औपनिवेशिक शासन द्वारा प्रारंभ किया जाता है। आधुनिकता का अर्थ है - पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली और पूंजीवादी रिश्तो को जन्म देने का प्रयास साम्राज्यवादी शासन द्वारा किया गया। अगर उपनि० शासन को पर्याप्त समय मिलता तो भारत एक औद्योगिक राष्ट्र होता। इस प्रकार साम्राज्यवादी इतिहास लेखन औपनिवेशिक शासन का बचाव करता हुआ दिखता है।

✗ साम्राज्यवादी लेखनी की सीमाएँ

⇒ 1707-1757 अंधकार युग है यह सही नहीं है

⇒ राजनैतिक विकेन्द्रीकरण है लेकिन संकट को जन्म नहीं देता है

⇒ न ही इस दौर में सांस्कृतिक आर्थिक जड़ता दिखाई पड़ती है

⇒ यह आधुनिकता नहीं वरन् अल्प विकास के विकास को जन्म देता है

1757 के बाद भारत आर्थिक रूप से निरंतर पिछड़ता चला जाता है।

⇒ भारत में पूँजीवादी नहीं, औपनिवेशिक ... ...णीकरण नहीं हुआ

उत्पादन प्रणाली का जन्म के होता है।

यानि 1707-1757 पिछड़ेपन को नहीं दर्शाता वही 1757 के बाद किसी क्रांतिया विकास की शुरूआत नहीं होती।

ये उपरोक्त दोनो अवधारणाएँ तथ्यो की कसौटी पर खरे नहीं उतरते, परिणामत: कुछ और मॉडल (उपागम) का ऐतिहासिक लेखन की प्रक्रिया में जन्म हुआ, जो निम्न है;